Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बिलासपुर जिले मेंग्रामीण प्रजननता का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन

निहारिका केशरवानी* डॉ. रत्नेश कुमार खन्ना**

* शोधार्थी (भूगोल) सामाजिक विज्ञान विभाग, डॉ सी व्ही रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान विभाग (भूगोल) डॉ सी व्ही रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – ग्रामीण प्रजननता किसी भी क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की दिशा को निर्धारित करने वाला एक महत्वपूर्ण जनांकिकीय घटक है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है, जिसके कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, आय तथा जीवनस्तर पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि महिला शिक्षा का निम्न स्तर, अल्प पारिवारिक आय, पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ तथा स्वास्थ्य सुविधाओं की सीमित उपलब्धता ग्रामीण प्रजननता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। शोध निष्कर्ष दर्शाते हैं कि प्रजननता में कमी लाने हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य एवं जागरूकता आधारित नीतियों को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

शब्द कुंजी –ग्रामीण प्रजननता, सामाजिक-आर्थिक प्रभाव, महिला शिक्षा, स्वास्थ्य, बिलासपुर जिला, भौगोलिक अध्ययन।

प्रस्तावना – प्रजननता जनसंख्या वृद्धि की मूल प्रक्रिया है, जिसका प्रभाव समाज की संरचना, संसाधनों के वितरण तथा आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। ग्रामीण भारत में प्रजननता का स्तर शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक पाया जाता है, क्योंकि यहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के अवसर अपेक्षाकृत सीमित हैं। छत्तीसगढ़ राज्य का बिलासपुर जिला कृषि प्रधान एवं ग्रामीण बहुल क्षेत्र है, जहाँ सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं।ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रजननता केवल जनसंख्या वृद्धि का कारण नहीं बनती, बल्कि इससे महिला स्वास्थ्य, बाल पोषण, शिक्षा की उपलब्धता तथा पारिवारिक आय पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भौगोलिक अध्ययन के माध्यम से क्षेत्रीय भिन्नताओं एवं कारण-परिणाम संबंधों को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना है।

साहित्य समीक्षा – ग्रामीण प्रजननता पर किए गए विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक एवं आर्थिक कारक इसकी दिशा को निर्धारित करते हैं। अनेक विद्वानों ने महिला शिक्षा को प्रजननता नियंत्रण का सबसे प्रभावी साधन माना है। पूर्ववर्ती शोधों में यह भी उल्लेख किया गया है कि कम आय वाले एवं अशिक्षित परिवारों में संतान संख्या अधिक होती है।भारतीय ग्रामीण समाज में पुत्र प्राथमिकता, प्रारंभिक विवाह तथा पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ प्रजननता को बढ़ावा देती हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) के अनुसार जिन क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच सीमित है, वहाँ प्रजननता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। हालांकि, बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों पर केंद्रित भौगोलिक अध्ययन अपेक्षाकृत कम उपलब्ध हैं, जिससे इस शोध की उपयोगिता और प्रासंगिकता बढ़ जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता के स्तर का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण प्रजननता को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का विश्लेषण करना।
3. प्रजननता का महिला स्वास्थ्य, शिक्षा एवं पारिवारिक आय पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करना।
4. ग्रामीण विकास एवं जनसंख्या नीति हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

अनुसंधान पद्धति – प्रस्तुत अध्ययन मेंवर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धतिअपनाई गई है।

आँकड़ों के स्रोत

1. **प्राथमिक आँकड़े :** चयनित गाँवों में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा
2. **द्वितीयक आँकड़े :** जनगणना रिपोर्ट, जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, NFHS रिपोर्ट

नमूना चयन – बिलासपुर जिले के विभिन्न विकासखंडों से 10 गाँवों के 300 ग्रामीण परिवारों का चयन किया गया।

विश्लेषण तकनीक – प्रतिशत विधि, औसत एवं तुलनात्मक विश्लेषण का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण एवं परिणाम – प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता एवं उससे संबंधित सामाजिक-आर्थिक कारकों का विश्लेषण किया गया। प्राथमिक सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से सामने आया कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रजननता का सबसे प्रमुख कारणमहिला शिक्षा का निम्न स्तरहै। जिन परिवारों में महिलाएँ

अशिक्षित हैं या केवल प्राथमिक स्तर तक शिक्षित हैं, वहाँ औसत संतान संख्या अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। इसके विपरीत, जिन परिवारों में महिलाएँ माध्यमिक अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त हैं, वहाँ प्रजननता का स्तर कम देखा गया। इससे यह सिद्ध होता है कि शिक्षा न केवल जागरूकता बढ़ाती है, बल्कि प्रजनन संबंधी निर्णयों को भी प्रभावित करती है।

शिक्षा के साथ-साथ पारिवारिक आय भी प्रजननता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण आर्थिक कारक है। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि निम्न आय वर्ग के परिवारों में संतान संख्या अधिक होती है। ऐसे परिवारों में बच्चों को आर्थिक संसाधन अथवा भविष्य की सुरक्षा के रूप में देखा जाता है, जिससे प्रजननता को सामाजिक स्वीकृति मिलती है। इसके विपरीत, मध्यम एवं उच्च आय वर्ग के परिवारों में सीमित संसाधनों के बेहतर उपयोग तथा जीवनदस्तर सुधार की प्रवृत्ति के कारण प्रजननता अपेक्षाकृत कम पाई गई।

तालिका 1 : ग्रामीण प्रजननता एवं सामाजिकदआर्थिक स्थिति (प्रतिशत में)

संकेतक	निम्न स्तर	मध्यम स्तर	उच्च स्तर
महिला शिक्षा	58	30	12
पारिवारिक आय	62	28	10
स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता	55	32	13
औसत संतान संख्या	अधिक	मध्यम	कम

(स्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित)

तालिका 1 से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में लगभग 58 प्रतिशतपरिवारों में महिला शिक्षा का स्तर निम्न है, जिसके परिणाम स्वरूप प्रजननता अधिक पाई गई। इसी प्रकार, 62 प्रतिशत परिवार निम्न आय वर्ग से संबंधित हैं, जहाँ आर्थिक असुरक्षा के कारण अधिक संतान संख्या देखने को मिलती है। यह स्थिति ग्रामीण समाज में गरीबी के चक्र को और मजबूत करती है।

स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता भी प्रजननता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। अध्ययन में पाया गया कि जिन ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाओं तथा परिवार नियोजन सुविधाओं की पहुँच सीमित है, वहाँ प्रजननता का स्तर अधिक है। तालिका के अनुसार, लगभग 55 प्रतिशत परिवारों को स्वास्थ्य सुविधाओं की पर्याप्त उपलब्धता नहीं है। इसके कारण महिलाओं में गर्भनिरोधक साधनों की जानकारी एवं उपयोग कम पाया गया, जिससे बारदबार गर्भधारण की स्थिति उत्पन्न होती है।

अधिक प्रजननता का सामाजिक प्रभाव यह है कि महिलाओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर पड़ता है। बारदबार गर्भधारण के कारण एनीमिया, कमजोरी एवं अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ती हैं। इसके अतिरिक्त, अधिक संतान संख्या के कारण बच्चों के पोषण एवं शिक्षा पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सीमित आय के कारण परिवार सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करने में असमर्थ रहते हैं।

आर्थिक दृष्टि से, अधिक प्रजननता परिवार की आय पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न करती है। निम्न आय वाले परिवारों में यह स्थिति गरीबी, ऋणग्रस्तता एवं सामाजिक पिछड़ेपन को जन्म देती है। संसाधनों का अत्यधिक विभाजन होने से प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है, जिससे जीवनदस्तर में सुधार की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं।

समग्र रूप से यह विश्लेषण दर्शाता है कि ग्रामीण प्रजननता केवल जनसंख्या वृद्धि की समस्या नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक विकास से गहराई से जुड़ी हुई है। यदि महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाए, स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार किया जाए तथा परिवार नियोजन कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो ग्रामीण प्रजननता को नियंत्रित कर सामाजिक-आर्थिक विकास को सुदृढ़ किया जा सकता है।

निष्कर्ष - प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव व्यापक, गहन तथा बहुआयामी है। अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि उच्च प्रजननता न केवल जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करती है, बल्कि इसका प्रत्यक्ष प्रभाव महिला स्वास्थ्य, बाल पोषण, शिक्षा के स्तर, पारिवारिक आय तथा समग्र जीवन-स्तर पर भी पड़ता है। ग्रामीण परिवारों में अधिक संतान संख्या के कारण सीमित संसाधनों पर दबाव बढ़ता है, जिससे गरीबी, कुपोषण एवं सामाजिक पिछड़ेपन की स्थिति बनी रहती है।अध्ययन में यह तथ्य विशेष रूप से उभरकर सामने आया है कि महिला शिक्षा प्रजननता को नियंत्रित करने का सबसे प्रभावी सामाजिक कारक है। शिक्षित महिलाएँ न केवल परिवार नियोजन के प्रति अधिक जागरूक होती हैं, बल्कि वे स्वास्थ्य सेवाओं का बेहतर उपयोग भी करती हैं। इसी प्रकार, स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता एवं आर्थिक स्थिति भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जिन क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ, मातृ-शिशु देखभाल तथा जागरूकता कार्यक्रम सुलभ हैं, वहाँ प्रजननता का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया है।अत: यह आवश्यक है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, विशेषकर महिला शिक्षा, को प्राथमिकता दी जाए तथा स्वास्थ्य आधारित योजनाओं को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया जाए। इसके साथ ही रोजगार सृजन, सामाजिक जागरूकता एवं परिवार नियोजन कार्यक्रमों के समन्वित प्रयासों से ग्रामीण प्रजननता में कमी लाकर संतुलित सामाजिक-आर्थिक विकास को गति प्रदान की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारत की जनगणना रिपोर्ट, 2011
2. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, बिलासपुर
3. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS)
4. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार
5. संबंधित सामाजिक-आर्थिक एवं जनांकिकीय शोध पत्र

****